परिवर्धित-संशोधित

सरस्वती

नई दीप मणिका

संस्कृत-पाठ्यपुस्तकम्

8

लेखिकाएँ

सरोज कुशल
होली चाइल्ड ऑक्ज़ीलियम स्कूल
वसंत विहार
नई दिल्ली

डॉ० शारदा मनोचा
दिल्ली पब्लिक स्कूल
नोएडा

डॉ० निर्मल दलाल
दिल्ली पब्लिक स्कूल
नोएडा

न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड
नई दिल्ली-110002 (इंडिया)

© New Saraswati House (India) Private Limited

NEW SARASWATI
HOUSE

Head Office : Second Floor, MGM Tower, 19 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi–110 002 (India)
Registered Office : A-27, 2nd Floor, Mohan Co-operative Industrial Estate, New Delhi–110 044

Phone : +91-11-4355 6600
Fax : +91-11-4355 6688
E-mail : delhi@saraswatihouse.com
Website : www.saraswatihouse.com
CIN : U22110DL2013PTC262320
Import-Export Licence No. 0513086293

Branches:
• Ahmedabad: Ph. 079-2657 5018 • Bengaluru: Ph. 080-2675 6396
• Chennai: Ph. 044-2841 6531 • Dehradun: Ph. +91-98374 52852
• Guwahati: Ph. 0361-2457 198 • Hyderabad: Ph. 040-4261 5566 • Jaipur: Ph. 0141-4006 022
• Jalandhar: Ph. 0181-4642 600, 4643 600 • Kochi: Ph. 0484-4033 369 • Kolkata: Ph. 033-4004 2314
• Lucknow: Ph. 0522-4062 517 • Mumbai: Ph. 022-2876 9871, 2873 7090
• Nagpur: Ph. +91-70661 49006 • Patna: Ph. 0612-2275 403 • Ranchi: Ph. 0651-2244 654

Revised edition 2019
Reprinted 2020

ISBN: 978-93-52726-44-8

The moral rights of the author has been asserted.

© New Saraswati House (India) Private Limited

Publisher's Warranty: The Publisher warrants the customer for a period of 1 year from the date of purchase of the Book against any Printing/Binding defect or theft/loss of the book.
Terms and Conditions apply: For further details, please visit our website www.saraswatihouse.com or call us at our Customer Care (toll free) No.: +91-1800 2701 460
Jurisdiction: All disputes with respect to this publication shall be subject to the jurisdiction of the Courts, Tribunals and Forums of New Delhi, India Only.
All rights reserved under the Copyright Act. No part of this publication may be reproduced, transcribed, transmitted, stored in a retrieval system or translated into any language or computer, in any form or by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopy or otherwise without the prior permission of the copyright owner. Any person who does any unauthorised act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

Product Code: NSS2NDM080SKTAC18CBY

This book is meant for educational and learning purposes. The author(s) of the book has/have taken all reasonable care to ensure that the contents of the book do not violate any copyright or other intellectual property rights of any person in any manner whatsoever. In the event the author(s) has/have been unable to track any source and if any copyright has been inadvertently infringed, please notify the publisher in writing for any corrective action.

PRINTED IN INDIA
By Vikas Publishing House Private Limited, Plot 20/4, Site-IV, Industrial Area Sahibabad, Ghaziabad–201 010 and published by New Saraswati House (India) Private Limited, 19 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi–110 002 (India)

© New Saraswati House (India) Private Limited

आमुख

'नई दीप मणिका' एक नए रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसके लेखन में इस बात का ध्यान रखा गया है कि संस्कृत को छात्रों की रुचि और क्षमता के अनुकूल सरल, सुगम तथा सुपाठ्य रूप में प्रस्तुत किया जाए। पाठों की रचना करते समय संस्कृत भाषा के व्याकरण के नियमों एवं उनके आधार पर भाषा संबंधी ज्ञान का संप्रेषण करने का प्रयास किया गया है।

समय के साथ-साथ पाठ्यक्रमों में परिवर्तन होते रहे। तदनुसार **दीप मणिका** के संस्करणों में भी संशोधन, परिवर्तन और परिवर्धन किया गया। आवश्यकतानुसार नए पाठों का समावेश किया गया तथा पाठ के अंत में दिए गए अभ्यासों का नवीनतम पाठ्यक्रम के आधार पर संशोधन एवं पुनर्लेखन किया गया।

पाँचवीं से आठवीं कक्षा तक के लिए तैयार की गई 'नई दीप मणिका' की इस शृंखला में उत्तरोत्तर शब्दार्थ के अतिरिक्त संधि-विच्छेद, संयोगयुक्त शब्द, प्रत्यय एवं उपसर्गयुक्त शब्द, नई धातुएँ, नए अव्यय एवं समस्तपदों का समावेश किया गया है। 'विशेष' तथा 'याद रखें' शीर्षकों के अंतर्गत विभिन्न उदाहरणों द्वारा व्याकरण के नियमों को सुचारु रूप से समझाया गया है।

प्रश्नों का विभिन्न श्रेणियों में विभाजन किया गया है। इनमें एकपदीय, बहुविकल्पीय, शब्दार्थ-मेलन, वचन-परिवर्तन, काल-परिवर्तन, वाक्य-शोधन, उचित पद-चयन, संस्कृत में अनुवाद, रिक्त स्थान-पूर्ति, पद-परिचय आदि का समावेश किया गया है। इसी प्रकार 'क्रियाकलापः' के अंतर्गत तालिका-निर्माण, चित्र-वर्णन, व्याकरण के सिद्धांतों का सचित्र निरूपण आदि के द्वारा विद्यार्थियों को अपनी सृजनात्मक क्षमता और भाषा कौशल का विकास करने के लिए प्रेरित किया गया है। मूल्यपरक प्रश्नों और सूक्तियों के माध्यम से जीवन मूल्यों और नैतिक मूल्यों का भी ज्ञान कराया गया है। कुछ प्रश्न बुद्धि-कौशल के विकास (HOTS) पर भी आधारित हैं।

कक्षा-8 की इस पुस्तक में पूर्वपठित व्याकरण के सिद्धांतों के अतिरिक्त पाँचों लकारों और पुरुष तथा वचन के अनुसार क्रियापदों एवं वाक्यों में उनका प्रयोग, 'क्त्वा', 'तुमुन्' और उत्तर कृदन्त के प्रत्ययों की वाक्य रचना में उपयोगिता और महत्व, लिंग-वचनानुसार विशेषण-विशेष्य का ज्ञान, श्लोकों का अन्वय, चित्र-वर्णन, संस्कृतानुवाद, समास तथा समस्तपदों का विग्रह, प्रहेलिका और अन्तरालाप, आत्मनेपदी धातुओं का प्रयोग, उपपद विभक्ति-प्रयोग, लिंग-वचनानुसार संख्या शब्दों का वाक्यों में अनुप्रयोग आदि का समावेश किया गया है।

आशा है कि मेरा यह लघु प्रयास संस्कृत के सभी छात्रों और शिक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

–सरोज कुशल

© New Saraswati House (India) Private Limited

विषय-सूची

• पाठानां विवरणम् .... (vi-ix)

1. अस्माकं विद्यालयः 11–15

2. चन्द्रगुप्तस्य न्यायः 16–20

3. महताम् अपि महान् 21–25

4. सुवचनानि 26–29

5. शृगाल-कथा 30–34

6. ईश्वरः यत्करोति शोभनं करोति 35–40

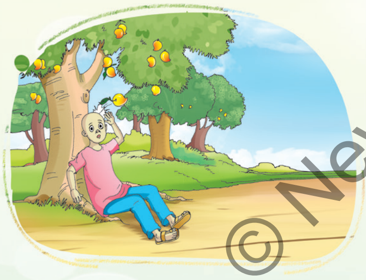

7. वार्तालापः (सन्धिः) 41–45

8. प्रहेलिकाः अन्तरालापाश्च 46–48

9. कन्यां संरक्षेत् पाठयेत् च 49–53

© New Saraswati House (India) Private Limited

10. वरं बुद्धिर्न सा विद्या (पञ्चतन्त्रात्) 54–59

11. साहित्य-सुधा (श्लोकसङ्कलनम्) 60–63

12. अन्तर्जालम् 64–68

13. गोवाप्रदेशः 69–73

14. दुर्बलानां बलं युक्तिः 74–78

15. प्रकाशस्य परावर्तनम् अपवर्तनम् च 79–82

16. संख्या-प्रयोगः (त्रिषु लिङ्गेषु वचनेषु च) ... 83–87

- परिशिष्टम् 88–102
- अभ्यास-पुस्तिका 103–128
- अभ्यास-प्रश्नपत्रम्–1 129–136
- अभ्यास-प्रश्नपत्रम्–2 137–144

© New Saraswati House (India) Private Limited

पाठानां विवरणम्

पाठ-संख्या	शीर्षकम्	पृष्ठ संख्या	भाषायाः कौशलम्			अभ्यासकार्यम्	क्रियाकलापः	उद्देश्यम्
			अवबोधनम्	शब्दज्ञानम्	भाषाज्ञानम्			
●	प्रार्थना	(x)	पठनाय स्मरणाय सस्वर गानाय					
1.	अस्माकं विद्यालयः	11	संवाद विधिना विद्यालयस्य वर्णनम्, प्रश्नोत्तरविधेः ज्ञानम्, नवधातूनां शब्दानां च वाक्येषु प्रयोगः।	नवीनशब्दाः, क्रियापदाः, धातवः, प्रत्यययुक्तशब्दाः, सन्धियुक्तशब्दाः सन्धि विच्छेदश्च, एतेषाम् अर्थाः।	पूर्वकक्षायां पठितस्य लट्लकारस्य पुनरावृत्तिः अभ्यासश्च, विभिन्नशब्दैः क्रियापदैः वाक्यनिर्माणम्।	एकपदेन उत्तराणि, धातूनाम् उचित प्रयोगः, वाक्यशोधनम्, वचन परिवर्तनम्, विपरीतार्थकशब्दैः सह शब्दानाम् मेलनम्, सन्धिः, अनुवादम् शब्दार्थमेलनम् च।	युष्मद्-अस्मद् शब्दरूपैः प्रश्नानाम् उत्तराणि, तेषां सचित्रनिरूपणम्।	संवादविधेः वार्तालापम्, प्रश्नोत्तराणि च, नित्यजीवने प्रयोगः।
2.	चन्द्रगुप्तस्य न्यायः	15	तुमुन्, क्त्वा प्रत्यययोः वाक्येषु प्रयोगः, लङ्लकारे वाक्य निर्माणम्। संवादेन प्रश्नोत्तरविधिना च कथानिरूपणम्।	नवशब्दाः, धातुपदानि, प्रत्ययाः, सन्धि-संयोग-युक्तशब्दाः, समस्त-पदानि तेषाम् अर्थाः च।	'क्त्वा' प्रत्ययस्य प्रयोगेन वाक्ययोजनम्, समस्तपदनिर्माणम् विग्रहः प्रयोगश्च। 'तुमुन्' प्रत्ययस्य वाक्येषु प्रयोगः।	पदपरिचयः, एकपदीय उत्तराणि, वाक्यशोध नम्, लकारपरिवर्तनम्, अनुवादम्, प्रकृतिप्रत्ययविभागम् प्रश्ननिर्माणम् मूल्यपरक-प्रश्नाः च।	श्लोकसंकलनम् चार्टनिर्माणम्, चित्रा-धारितं पञ्चवाक्येषु लेखनम्।	'क्त्वा', 'तुमुन्' प्रत्यय प्रयोगेण वाक्यनिर्माणम् उपयोगिता च।
3.	महताम् अपि महान्	21	उपपदविभक्तिप्रयोगः परिचयश्च, वाक्यरचना, उपपदविभक्तेः उपयोगिता।	नव-शब्दाः, संयोगयुक्त-शब्दाः, धातुपदाः, समस्तपदाः तेषाम् अर्थाः च।	उपपदविभक्तेः सम्यक्-प्रयोगेण भाषायाः परिमार्जनम् संवर्धनम् च।	एक-पदोत्तरम्, प्रश्न-निर्माणम्, कः कं प्रति प्रश्नाः, बहुविकल्पीप्रश्नाः, वाक्यशोधनम्, उचित-विभक्ति-प्रयोगम्, उचित-शब्दप्रयोगम् च कथानक-क्रमानुसारेण लेखनम् मूल्यपरक-प्रश्नाः च।	उपपदविभक्ति प्रयोगस्य रञ्जितपदैः सह तालिका निर्माणम्, चित्रं दृष्ट्वा संस्कृतेन पञ्चवाक्यलेखनम्।	उपपदविभक्तेः वाक्येषु उचितप्रयोगः।

© New Saraswati House (India) Private Limited

पाठ-संख्या	शीर्षकम्	पृष्ठ संख्या	भाषायाः कौशलम्			अभ्यासकार्यम्	क्रियाकलापः	उद्देश्यम्
			अवबोधनम्	शब्दज्ञानम्	भाषाज्ञानम्			
4.	सुवचनानि	26	शिक्षाप्रदश्लोकानां संग्रहः। श्लोकस्मरणं-पाठं-गायनम्। नित्यजीवने श्लोकानां प्रयोगः। श्लोकानाम् अन्वयः उपयोगिता च।	नवीनशब्दानां अर्थानां च ज्ञानम्। सन्धि संयोगयुक्ताः शब्दाः, नवधातवः, समस्तपदानि तेषां अर्थाः च।	पद्य-प्रयोगेण विचाराणां निरूपणम्। श्लोकानां प्रयोगेण भाषायाः सौन्दर्यवर्धनम्।	एकपदोत्तराणि, पूर्णवाक्य-उत्तराणि, मञ्जूषायां प्रदत्तपदैः रिक्तस्थानपूर्तिः, अव्ययानां वाक्येषु प्रयोगः। लकार- परिवर्तनम् श्लोकान्वयः, शब्दार्थमेलनम्, अनुवादम् मूल्यपरक-प्रश्नाः च।	श्लोकानाम् अन्वयेन सहितं चार्टनिर्माणम्, श्लोकानां सस्वरपाठं स्मरणम् च।	पद्य-गायनम्, जीवने भाषायां च उपयोगः।
5.	शृगाल-कथा	30	शिक्षाप्रदकथायाः उपयोगिता, कथा-माध्यमेन भाषाज्ञानम् तस्य रोचकता च। धूर्ततायाः क्षणभंगुरता। स्वभावस्य जीवने महत्त्वम्। 'क्त-क्तवतु' प्रत्यययोगेन धातूनाम् शब्देषु परिवर्तनम्।	नवीनशब्दाः, क्रियापदाः, प्रत्यययुक्तशब्दाः, सन्धिसंयोगयुक्त शब्दाः, समस्तपदाः, तेषाम् अर्थाः च।	भाषायां शब्दज्ञानस्य प्रयोगम्, तेन भाषायाः समृद्धिः, कथालेखनविधेः ज्ञानम्।	लकारपरिवर्तनम्, पदपरिचयः, उचित- प्रत्ययचयनम्, एकपदीय उत्तराणि, पूर्णवाक्येन उत्तरम्, बहुविकल्पी- प्रश्नाः, कथानक- क्रमानुसारेण पुनर्लेखनम् प्रश्ननिर्माणं मूल्यपरक-प्रश्नाः च।	'क्त-क्तवतु' प्रत्ययैः सह सारणी निर्माणम् अर्थलेखनम् च।	कथावाचने, पठने लेखने च छात्राणाम् अभिरुचिवर्धनम्।
6.	ईश्वरः यत्करोति शोभनं करोति	35	कथामाध्यमेन विशेषण-विशेष्यज्ञानम्, तयोः समानविभक्तिः वचनस्य च प्रयोगः। ईश्वरस्य रचनायाः प्रकृतेः पूर्णत्वम्।	शब्दार्थाः, सन्धि संयोग- युक्तशब्दाः, समस्तपदाः, नवधातुपदाः, विशेषण-विशेष्य शब्दाः तेषाम् अर्थाः च।	विशेषणविशेष्येषु समानविभक्ति -वचनस्य प्रयोगेण वाक्यनिर्माणेन च भाषाज्ञानम्। कथामाध्यमेन, भाषाध्ययेन सरलता रोचकता च।	लकारपरिवर्तनम्, अव्ययानां वाक्यप्रयोगः, विशेषण-विशेष्यमेलनम्, पदपरिचयः, एकपदीय उत्तराणि, पूर्णवाक्योत्तराणि, वचनपरिवर्तनम् कथानक-क्रमानुसारेण पुनर्लेखनम्, अनुवादं मूल्यपरक-प्रश्नाः च।	चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायाः सहायतया पञ्चवाक्यलेखनम्। फलानाम् शाकानाम् च चित्रैः सह सञ्चिकायां संस्कृतेन नामलेखनम्।	विशेषण-विशेष्य-सम्बन्धस्य ज्ञानम्।
7.	वार्तालापः (सन्धिः)	41	संवाद-प्रश्नोत्तर- माध्यमेन शब्दानाम् सन्धिज्ञानम्, स्वरसन्धिः भेदानां च परिचयः।	सन्धियुक्तशब्दाः, सन्धिच्छेदः, समस्तपदाः, नवीनशब्दाः, अर्थाः च।	शब्दसन्धिः सन्धि विच्छेदः च, एतयोः संस्कृतभाषायां महत्त्वम् प्रयोगश्च।	सन्धिः सन्धिविच्छेदश्च। दीर्घ-गुण-वृद्धि-यण्-अयादि सन्धिनियमाः, तेषां प्रश्नोत्तरे प्रयोगश्च मूल्यपरक-प्रश्नाः च।	चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तैः शब्दैः वाक्यानां निर्माणम्। सन्धिभेदानां सचित्र चार्ट-निर्माणम्।	सन्धिः, भेदाः, सन्धिच्छेदः एतेषां भाषायां प्रयोगः।

© New Saraswati House (India) Private Limited

पाठ-संख्या	शीर्षकम्	पृष्ठ संख्या	भाषायाः कौशलम्			अभ्यासकार्यम्	क्रियाकलापः	उद्देश्यम्
			अवबोधनम्	शब्दज्ञानम्	भाषाज्ञानम्			
8.	प्रहेलिकाः अन्तरालापाश्च	46	प्रहेलिका-अन्तरालापयोः परिचयः, तयोः अन्तरम्। बुद्धिविकासे तयोः योगदानम् च।	नवीनशब्दाः, सन्धियुक्तशब्दाः, प्रत्ययान्तशब्दाः, धातुपदाः, समस्तपदाः, तेषाम् अर्थाः च।	प्रहेलिकान्तरालापयोः छात्राणाम् बुद्धिविकासे योगदानम्, भाषायाः सौन्दर्याय तयोः उपयोगिता।	एकपदीय उत्तराणि, उपसर्गाणां पृथक्करणम्, शब्दमेलनम्, मञ्जूषायाः रिक्तस्थानपूर्तिः, श्लोकान्वयः, शब्दार्थमेलनम् मूल्यपरकप्रश्नाः च।	प्रहेलिकानां अन्तरालापानां च संकलनम् श्लोक-बद्ध-अनुवादम् च।	प्रहेलिका-अन्तरालापयोः बुद्धिविकासे उपयोगिता।
9.	कन्यां संरक्षेत् पाठयेत् च	49	अस्माकं समाजे कन्यानाम् महत्त्वम्, तासां रक्षणस्य पाठनस्य च आवश्यकता।	नवीनशब्दाः नवधातवः, सन्धि-संयोगयुक्तपदानि, प्रत्ययान्तशब्दाः, समस्तपदानि तेषाम् अर्थाः च।	विधिलिङ् लकारस्य वाक्येषु प्रयोगः। 'क्त', 'अनीयर्' प्रत्ययोः भाषायां अनुप्रयोगः।	एकपदेन उत्तरम्, पूर्णवाक्येन उत्तरम्, प्रश्ननिर्माणम्, उचितक्रमेण वाक्यलेखनम्, शब्दार्थमेलनम्, विधिलिङ् लकारे वाक्य-परिवर्तनम्, पदपरिचयश्च मूल्यपरक-प्रश्नाः च।	'अनीयर्' प्रत्ययस्य योगेन शब्दनिर्माणम्, चित्रवर्णनम्, पञ्च विश्वविख्यातानां महिलानां परिचयः।	कन्यायाः सरक्षणस्य पाठनस्य च महत्त्वम्।
10.	वरं बुद्धिर्न सा विद्या (पञ्चतन्त्रात्)	54	पञ्चतन्त्रात् इयं गाथा शिक्षयति यत् विद्यायाः प्रयोगम् बुद्धिर्विना न कर्तव्यम्। आत्मनेपदी-धातूनां वाक्येषु प्रयोगः।	नव-शब्दाः, सन्धि-संयोगयुक्ताः शब्दाः, प्रत्ययान्तशब्दाः नवधातवः, समस्तपदानि एतेषाम् अर्थाः च।	आत्मनेपदीधातूनां परिचयः, वाक्येषु प्रयोगः, नवपठित-शब्दानां-पदानां-धातूनां-प्रत्ययानां भाषायां प्रयोगः वाक्यरचना च।	बहुविकल्पीप्रश्नाः, घटना-क्रमानुसारेण पुनर्लेखनम्, विपरीत शब्दमेलनम्, प्रकृति- प्रत्ययविभागः, 'स्म' विकिरणस्य प्रयोगः, उचितपदचयनम् शब्दार्थ मेलनम् मूल्यपरक-प्रश्नाः च।	चित्राणि दृष्ट्वा 'पिपासितः काकः' अस्याः कथायाः निरूपणम्, एवमेव अन्य-लघुकथानां सचित्रं लेखनं निरूपणं च।	बुद्धि-अनुसारेण पठित विद्यायाः सदुपयोगस्य आवश्यकता, न तु दुरुपयोगस्य।
11.	साहित्य-सुधा (श्लोकसंकलनम्)	60	प्राचीनग्रन्थेभ्यः उद्धरिताः शिक्षाप्रदश्लोकाः। संस्कृत-साहित्यस्य पद्यरचनानाम् परिचयः।	शब्दार्थानि, सन्धि-संयोग-युक्तशब्दाः अर्थाः च।	प्राचीनसंस्कृतसाहित्यस्य महत्त्वम्, श्लोकानाम् अन्वयेन तेषाम् आशयस्य ज्ञानस्य च सरलीकरणम्।	एकपदेन उत्तरम्, सन्धि-संयोगं सन्धिविच्छेदं वा, बहुविकल्पीप्रश्नाः, उचितपदेन रिक्तस्थान-पूर्तिः, उचितपदमेलनम्, पर्यायवाची-शब्दमेलनम्, शब्दार्थ-मेलनम् मूल्यपरक-प्रश्नाः च।	सन्धिसंयोगयुक्त शब्दानां सञ्चिकायां लेखनम् श्लोकानाम् अन्वयं च।	प्राचीनसंस्कृत-साहित्यस्य ज्ञानम्।

© New Saraswati House (India) Private Limited

पाठ-संख्या	शीर्षकम्	पृष्ठ संख्या	भाषायाः कौशलम्			अभ्यासकार्यम्	क्रियाकलापः	उद्देश्यम्
			अवबोधनम्	शब्दज्ञानम्	भाषाज्ञानम्			
12.	अन्तर्जालम्	64	सामाजिकमाध्यमस्य उपयोगानां दुरुपयोगानां च अवबोधनम्।	नव-शब्दाः, संयोगयुक्त-शब्दाः, धातुपदाः, समस्तपदाः तेषाम् अर्थाः च। अन्तर्जालेन सम्बद्धाः शब्दाः अर्थाश्च।	उपपदविभक्तेः सम्यक्-प्रयोगेण भाषायाः परिमार्जनम् संवर्धनम् च। भाषापरिमार्जनाय अन्तर्जालस्य प्रयोगम्।	पाठात् रिक्तस्थानपूर्तिः। एकपदेन पूर्णवाक्येन च उत्तराणि। प्रश्ननिर्माणम्, अव्ययैः रिक्तस्थानपूर्तिः, पदपरिचयः, लङ् लकारे वाक्य-परिवर्तनम् अनुवादं मूल्यपरक-प्रश्नाः च।	'गूगलस्य' लाभाः हानयः च सचित्र निरूपणम्, विशेषण-विशेष्या-धारिता वाक्यरचना।	अन्तर्जालस्य उपयोगितायाः ज्ञानम्।
13.	गोवाप्रदेशः	69	पर्यटकस्थलस्य संस्कृतिः, उत्पादनम्, भाषा, दर्शनीय स्थानानि, नद्यः, सागराः इत्यादीनां ज्ञानम्। पर्यटनस्य लाभाः।	पर्यटनसम्बन्धीशब्दाः, शब्दार्थाः, सन्धि-संयोगयुक्तशब्दानाम् ज्ञानम् अर्थाः च। समस्तपदानि अर्थाः च।	पर्यटकस्थलस्य वर्णनाय उपयुक्तशब्दानां वाक्यानां च ज्ञानम्। भाषायां कस्यापि एतादृशस्थलस्य विषये लेखनसामर्थ्यम्।	एकपदेन उत्तराणि, बहुविकल्पीप्रश्नाः, वाक्यानाम् उचितक्रमेण पुनलेखनम्, शब्दार्थमेलनम्, असंगतं पदचयनम्, प्रश्ननिर्माणम्, अनुवादं मूल्यपरक-प्रश्नाः च।	कस्यापि रमणीयस्थलस्य संस्कृतेन वर्णनम्। चित्रं दृष्ट्वा पञ्चवाक्यलेखनम्।	पर्यटनस्य लाभाः।
14.	दुर्बलानां बलं युक्तिः	74	कथामाध्यमेन संकटकाले दुर्बलैः किं कर्तव्यम् इति अवबोधनम्। 'क्त', 'क्तवतु' प्रत्ययोः वाक्यरचनायां प्रयोगः।	शब्दार्थाः, सन्धि संयोगयुक्त-शब्दाः अर्थानि च प्रत्ययान्तशब्दाः, धातुपदाः। समस्तपदाः अर्थाः च।	'क्त'–'क्तवतु' प्रत्यययोः भाषायां प्रयोगः, धातुसंयोगेन प्रत्ययैः शब्दनिर्माणम्, शब्दरूपाः अर्थानि च।	एकपदेन पूर्णवाक्येन च उत्तराणि, प्रश्ननिर्माणम्, अव्ययेन वाक्यनिर्माणम्, 'क्तवतु' प्रत्ययान्तशब्दैः रिक्तस्थानपूर्तिः, 'क्त्वा' प्रत्ययेन वाक्य-संयोजनम्, अनुवादं मूल्यपरक-प्रश्नाः च।	'क्त'–'क्तवतु' प्रत्यययुक्तशब्दानां लिंग-वचनानुसारेण शब्दरूपानां रञ्जितं चार्टनिर्माणम्, चित्रवर्णनम्।	'क्त' 'क्तवतु' प्रत्ययानां भाषायां प्रयोगः।
15.	प्रकाशस्य परावर्तनम् अपवर्तनम् च	89	संस्कृतवाङ्मये वैज्ञानिक-तथ्यानां सोदाहरण ससचित्र-निरूपणम् आधुनिक-विज्ञाने प्रासंगिकता च।	वैज्ञानिक शब्दावलिः, नवीनशब्दाः, प्रत्ययान्त-शब्दाः, नवधातवः, सन्धियुक्तशब्दाः, एतेषाम् अर्थाः च।	विज्ञानस्य पारिभाषिकशब्दानां संस्कृतभाषायां प्रयोगः उपयोगिता च।	एकपदीयोत्तराणि, पूर्ण-वाक्योत्तराणि, उचित- पदचयनम्, विपरीत- शब्दमेलनम्, लकार परिवर्तनम्, शब्दार्थमेलनम् प्रश्ननिर्माणम् मूल्यपरक-प्रश्नाः च।	पाठे वर्णितप्रयोगस्य छात्रैः निरूपणम् प्रयोगविधिः, परिणामयोः सञ्चिकायां सचित्रलेखनम्।	प्राचीनसंस्कृत-वाङ्मये वैज्ञानिक सिद्धान्तानां परिचयः।
16.	संख्या-प्रयोगः (त्रिषुलिंगेषु वचनेषु च)	83	लिंग-वचनानुसारेण संख्यावाची शब्दानां विशेषण-रूपेण परिचयः, विशेषण-विशेष्य सम्बन्धः भाषायां प्रयोगश्च।	संख्यावाचीशब्दाः, शब्द-रूपाः, लिंगानुसारेण संख्यावाचीशब्देषु भिन्नता, एतेषाम् अर्थाः। पूरणार्थक संख्याशब्दाः अर्थः च।	लिंग-वचनानुसारेण संख्याशब्दानां प्रयोगाय नियमानां ज्ञानम्, भाषायां विशेषणविशेष्य रूपेण प्रयोगः।	संस्कृते अंक-लेखनम्, शब्दलेखनम्, अनुवादम्।	संख्यानाम् लिंग-वचनानुसारेण सचित्र निरूपणम् चार्टनिर्माणम् च।	संख्याशब्दानाम् विशेषण-रूपेण प्रयोगः।

© New Saraswati House (India) Private Limited

प्रार्थना

1. **ॐ तेजोऽसि तेजो मयि धेहि,**
वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि,
बलमसि बलं मयि धेहि,
ओजोऽसि ओजो मयि धेहि।
ॐ तेजस्वि नावधीतमस्तु!

अर्थ—हे प्रभु! आप तेजस्वी हैं, मुझे तेज दें; शक्तिमान हैं, मुझे शक्ति दें; स्वयं बल (स्वरूप) हैं, मुझे बल दें; प्रकाश (स्वरूप) हैं, मुझे प्रकाश दें! हे प्रभु, आप हमें तेजस्वी बनाएँ।

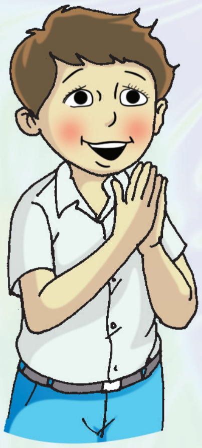

2. **ॐ भूर्भुवः स्वः।**
तत्सवितुर्वरेण्यम्
भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्॥

अर्थ—जो सभी जीवों को प्राण देता है, सभी दुखों को दूर करता है तथा नाना प्रकार के सुखों को देने वाला है, हम सब उस श्रेष्ठ, दीप्तिमान देवता सूर्य का ध्यान करें (जिससे) कि वह हमारी बुद्धि को प्रेरित करे।

3. **नमामि ईश्वरं पूर्वम् ततः श्रेष्ठान् नमाम्यहम्।**
काले करोमि कार्याणि, पठनं क्रीडनम् तथा॥

अर्थ—मैं पहले ईश्वर को प्रणाम करता हूँ, फिर बुजुर्गों को प्रणाम करता हूँ। पढ़ना, लिखना आदि कार्य समय पर करता हूँ।

4. **ॐ द्यौः शान्तिः अन्तरिक्ष शान्तिः पृथ्वी**
शान्तिरापः शान्तिरौषधयः शान्तिः वनस्पतयः
शान्तिः विश्वेदेवाः शान्तिः ब्रह्मा शान्तिः सर्वम्
शान्तिः। शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॐ॥

अर्थ—द्युलोक (सूर्य, चंद्र, तारा आदि) में शांति रहे, अंतरिक्ष में शांति हो, पृथ्वी पर शांति रहे, औषधियों में शांति हो, वनस्पतियों में शांति रहे, विश्व के देवता (सभी जीवों) में शांति व्याप्त हो, ब्रह्मा शांत रहें, सब कुछ शांत हो। शांति ही (शक्ति रूपा) शांति है, (अतः) वह मुझे शांति प्रदान करें। (आधिभौतिक) शांति हो, (आध्यात्मिक) शांति प्राप्त हो, (आधिदैविक) शांति रहे।

© New Saraswati House (India) Private Limited

1 अस्माकं विद्यालयः

© New Saraswati House (India) Private Limited

गौरवः – सौरभ! अद्य अहं त्वां निजविद्यालयं नयामि।

सौरभः – भवतु! तव विद्यालयः कुत्र अस्ति?

गौरवः – मम विद्यालयः उद्यानस्य समीपे एव अस्ति। वयं पादाभ्याम् एव तत्र गच्छामः।

सौरभः – शोभनम्। आवाम् अपि तत्र गच्छावः।

कणिका – भ्रातः! अहम् अपि त्वया सह गच्छामि।

गौरवः – अस्तु! शीघ्रं चल।

(सर्वे विद्यालयं गच्छन्ति)

गौरवः – अयम् अस्माकं विद्यालयः अस्ति। अत्र चतुस्सहस्रं छात्राः पठन्ति।

सौरभः – तव विद्यालये कति अध्यापकाः सन्ति?

गौरवः – मम विद्यालये द्विशतम् अध्यापकाः अध्यापिकाः च पाठयन्ति।

सौरभः – तव विद्यालयः अति सुन्दरः अस्ति। एषः विशालः अपि अस्ति।

कणिका – पश्य, तत्र एकम् उद्यानम् अपि अस्ति।

सौरभः – आम्! सुन्दराणि पुष्पाणि अपि विकसन्ति। गौरव! त्वं विद्यालये किं किं करोषि?

गौरवः – अहं विद्यालये पठामि, लिखामि, धावामि, क्रीडामि नृत्यामि च। मम मित्राणि अपि अत्र पठन्ति। वयं सर्वे प्रसन्नाः भवामः।

कणिका – सौरभ! अस्माकं विद्यालये वार्षिकोत्सवः अभवत्। तत्र एकस्मिन् नाटके गौरवः निजमित्रैः सह अभिनयम् अकरोत्। अहम् अपि नृत्यम् अकरवम्।

सौरभः – साधु! किं त्वं तरणताले तरसि?

गौरवः – न, न। अहं तु न तरामि परं मम मित्राणि तरन्ति। कणिका अपि तरणं जानाति। अधुना ग्रीष्मावकाशे अहम् विद्यालयम् आगत्य तरणस्य अभ्यासं कर्तुम् इच्छामि।

सौरभः – युष्माकं विद्यालयः शोभनः अस्ति। अधुना सूर्यास्तः भवति। वयं शीघ्रं गृहं चलामः।

(सर्वे गृहं गच्छन्ति)

© New Saraswati House (India) Private Limited

शब्द-शक्तिः (Word Meanings)

नयामि	– (मैं) ले जाता हूँ	(I) carry	**कति**	– कितने	how many
पादाभ्याम्	– दो पैरों से	with two feet	**द्विशतम्**	– दो सौ	two hundred
चतुस्सहस्त्रम्	– चार हज़ार	four thousand	**तरणताल**	– तैरने का तालाब	swimming pool

नई धातुएँ (New Roots)

क्षाल्	–	धोना	to clean	**ज्ञा**	–	जानना	to know

प्रत्ययुक्त शब्द (Words with a Suffix)

आगत्य – आ (उपसर्ग) + गम् (धातु) + ल्यप् (प्रत्यय)

कर्तुम् – कृ (धातु) + तुमुन् (प्रत्यय)

सन्धिच्छेद (Disjoining words)

विद्यालयः – विद्या + आलयः			**ग्रीष्मावकाशे** – ग्रीष्म + अवकाशे		
वार्षिकोत्सवः – वार्षिक + उत्सवः			**सूर्यास्तः** – सूर्य + अस्तः		

अभ्यास

सम्प्रति लेखनीयम्

1. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए। Answer in a complete sentence.)

उदाहरणम्– **तव** विद्यालये **कति** अध्यापकाः सन्ति? **मम** विद्यालये **द्विशतम्** अध्यापकाः सन्ति।

(क) **तव** विद्यालयस्य नाम **किम्** अस्ति? ....

(ख) **तव** विद्यालये **कति** छात्राः सन्ति? ....

(ग) **युष्माकं** विद्यालये संस्कृतस्य **कति** अध्यापकाः सन्तिः? ....

(घ) **त्वं** विद्यालये **किं किं करोषि**? ....

(ङ) **किं त्वं** तरणम् **जानासि**? ....

2. निम्नलिखितशब्दानां विपरीतार्थान् मञ्जूषायाः चित्वा लिखत।

(निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द मंजूषा में से चुनकर लिखिए। Choose and write the proper antonyms of the words given below from the box.)

लघुः, दूरे, तदा, शनैः, निर्गत्य, असुन्दरः, अप्रसन्नः, सूर्योदयः।

(क) शीघ्रम् – .... (ख) समीपे – ....

(ग) विशालः – .... (घ) आगत्य – ....

(ङ) सुन्दरः – .... (च) प्रसन्नः – ....

(छ) सूर्यास्तः – .... (ज) अधुना – ....

3. वाक्यानि शुद्धानि कुरुत।

(वाक्यों को शुद्ध कीजिए। Correct the sentences.)

उदाहरणम्– यूयं पठितुं विद्यालयं **गच्छन्ति**। यूयं पठितुं विद्यालयं **गच्छथ**।

(क) राजीवः संजयः च विद्यालये **क्रीडन्ति धावन्ति** च। ....

(ख) अस्माकं विद्यालयः विशालः सुन्दरः च **असि**। ....

© New Saraswati House (India) Private Limited

(ग) त्वं गृहं गत्वा जलं **पिबति**। ....

(घ) भवान् अद्य किं **करोषि**? ....

(ङ) आवाम् उद्याने एव **तिष्ठथः**। ....

भाषा-अवबोधनम्

1. क्रियायाः उचितरूपेण रिक्तस्थानानि पूरयत।

(उचित क्रिया-पदों के द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। Fill in the blanks with appropriate verbs.)

(क) अध्यापकाः छात्रान् ....। (पाठ् + य) (ख) नद्यः पर्वतात् ....। (उत् + भू)

(ग) अश्वः क्षेत्रे तीव्रं ....। (धाव्) (घ) सेविका वस्त्राणि ....। (क्षाल्)

(ङ) सूर्यः सायंकाले अस्तं ....। (गम्) (च) खगौ वृक्षे ....। (स्था)

2. निर्देशानुसारं वचनं परिवर्त्य वाक्यानि पुनः लिखत।

(नीचे दिए गए वाक्यों के निर्देशानुसार वचन परिवर्तन करके लिखिए। Change the sentences as directed and rewrite them.)

उदाहरणम्– त्वं भोजनं खादित्वा **क्रीडसि**। (द्विवचने) **युवां** भोजनं खादित्वा **क्रीडथः**।

(क) **अहं** त्वां विद्यालयं **नयामि**। (बहुवचने) ....

(ख) तत्र **एकम् उद्यानम् अस्ति**। (द्विवचने) ....

(ग) **सुन्दराणि पुष्पाणि** अपि **विकसन्ति**। (एकवचने) ....

(घ) **वयं** विद्यालये **पठामः क्रीडामः** च। (द्विवचने) ....

(ङ) मम **मित्रं** तरणताले **तरति**। (बहुवचने) ....

3. सन्धिं सन्धिच्छेदं वा कुरुत।

(संधि या संधि-विच्छेद कीजिए। Join or disjoin the words.)

(क) विद्या + आलयः – .... (ख) ग्रीष्म + अवकाशः – ....

(ग) वार्षिक + उत्सवः – .... (घ) सूर्य + अस्तः – ....

(ङ) सूर्योदयः – .... + ... (च) देवालयः – .... + ...

(छ) आयताकारः – .... + ... (ज) लघूत्सवः – .... + ...

4. शब्दार्थमेलनम् कुरुत।

(शब्दों को अर्थों से मिलाइए। Match the words with their meanings.)

(क) पादाभ्याम्	(*i*) तैरने का तालाब
(ख) तरणताल	(*ii*) कितने
(ग) चतुस्सहस्रम्	(*iii*) दो पैरों से
(घ) आगत्य	(*iv*) आकर
(ङ) कति	(*v*) चार हज़ार

© New Saraswati House (India) Private Limited

5. संस्कृतेन अनुवादं कुरुत।

(संस्कृत में अनुवाद कीजिए। Translate into Sanskrit.)

(क) हम विद्यालय में मित्रों के साथ खेलते हैं। ....

(ख) हमारा बगीचा बड़ा सुंदर है। ....

(ग) बगीचे में अनेक पेड़ और पौधे हैं। ....

(घ) कणिका और मणिका उत्सव में नाचती हैं। ....

मूल्यपरकम्

1. किं त्वं विद्यालयं गत्वा पठसि अथवा समयं वृथा करोषि? (क्या तुम विद्यालय जाकर पढ़ते हो या समय नष्ट करते हो?)
2. सूर्यास्ते त्वं गृहम् आगच्छसि अथवा क्रीडसि? (सूर्य के अस्त होने के बाद तुम घर आ जाते हो या खेलते रहते हो?)

क्रियाकलापः

- जब किसी प्रश्न में 'युष्मद्' शब्द के रूपों का प्रयोग होता है तो उत्तर में 'अस्मद्' शब्द के रूपों का प्रयोग किया जाता है, क्रिया में भी तदनुसार परिवर्तन होता है। कक्षा में प्रश्नोत्तर विधि से छात्रों को यह बात समझाई जा सकती है– जैसे– (क) **तव** नाम किम् अस्ति? **मम** नाम सुरेशः/दीपा/माला अस्ति। (ख) **त्वम्** कुत्र गच्छसि? **अहम्** विद्यालयम् गच्छामि। आदि। छात्र अपनी संचिका में तीनों वचनों का प्रयोग करते हुए इस प्रकार के पाँच प्रश्नोत्तर लिखें और चित्रों से दर्शाएँ; जैसे–

त्वं कुत्र गच्छसि?

अहं विद्यालयं गच्छामि।

याद रखें

प्रेरणार्थक क्रिया उसे कहते हैं जहाँ कर्ता स्वयं काम न करके दूसरे से काम करवाता है; जैसे–

पठ्	=	पढ़ना	>	पठति	=	पढ़ता है	>	पाठयति	=	पढ़वाता है/पढ़ाता है।
लिख्	=	लिखना	>	लिखति	=	लिखता है	>	लेखयति	=	लिखवाता है।
कृ	=	करना	>	करोति	=	करता है	>	कारयति	=	करवाता है।

सूक्तिः

॥ संघे शक्तिः कलियुगे ॥

(कलियुग में संगठन में शक्ति होती है।)

© New Saraswati House (India) Private Limited

2 चन्द्रगुप्तस्य न्यायः

© New Saraswati House (India) Private Limited

तन्मयः – एतत् त्वं किं करोषि?

प्रणयः – किं न पश्यसि, अहं चित्रं रचयामि।

तन्मयः – एतत् कस्य चित्रम्?

प्रणयः – एतत् चाणक्यस्य चित्रम्। किं त्वं जानासि चाणक्यः कः आसीत्?

तन्मयः – आम्! दूरदर्शनस्य कार्यक्रमे अहं चाणक्यनाटकम् अपश्यम्। सः एव चाणक्यः चन्द्रगुप्तं नृपम् अकरोत्। प्रणय! चाणक्यस्य विषये किंचित् वद।

प्रणयः – कस्मिंश्चित् ग्रामे गोपालकाः धेनूः वने चारयितुम् अनयन्। तदा ते बालाः 'राजा-राजा' इति क्रीडितुम् आरभन्। एकः नृपः अभवत्, द्वितीयः अमात्यः, तृतीयः सेनापतिः शेषाः च प्रजाजनाः अभवन्।

तन्मयः – आम्! आम्! वयम् अपि एवम् 'अध्यापक-अध्यापक' 'माता-बालक' च अक्रीडाम।

प्रणयः – तदा एव तत्र द्वे महिले आगच्छताम्। एकस्याः अङ्के एकः शिशुः आसीत्। नृपः अपृच्छत्–युवां किमर्थम् आगच्छतम्? एका महिला अवदत्–राजन्! इयं मम सेविका अस्ति। अधुना एषा मम शिशुं स्वशिशुः कथयति। दयानिधान! दयां कुरु। न्यायं कुरु।

तन्मयः – अहो! तदा किम् अभवत्?

प्रणयः – तदा नृपः ते महिले ध्यानेन अपश्यत् अवदत् च–'शिशोः द्वे खण्डे कृत्वा अर्धं अर्धं ताभ्यां यच्छ।'

तन्मयः – किं सः शिशोः खण्डे अकरोत्?

प्रणयः – न, न! यावत् ते खण्डे करणाय उत्तिष्ठन् तावत् अन्या महिला नृपस्य चरणयोः अपतत् अवदत् च–महाराज! भवान् शिशुं तस्यै एव यच्छतु, शिशोः खण्डे मा करोतु।

तन्मयः – ततस्ततः किम्?

प्रणयः – तदा नृपः क्रुध्यन् अवदत्– अमात्य! सैव शिशोः माता अस्ति। तस्यै बालकं यच्छ। अन्यायाः च शिरश्छेदनं कुरु। किम् जाने? तदा किम् अभवत्?

तन्मयः – न! अहं न जानामि।

प्रणयः – एकः नरः तत्र एतत् सर्वम् अपश्यत्। सः तस्य बालकस्य न्यायं दृष्ट्वा विस्मितः अभवत्। सः बालकस्य मातुः समीपं गत्वा अवदत्–देवि! स्व-बालकं मह्यम् यच्छ। अहम् इमं पाठयित्वा नृपं करिष्यामि।

सः बालकः चन्द्रगुप्तः आसीत्। स नरः चाणक्यः आसीत्।

© New Saraswati House (India) Private Limited

शब्द-शक्तिः (Word Meanings)

रचयामि	– (मैं) बना रहा हूँ	(I) make	**अङ्के**	– गोद में	in the lap
कस्मिंश्चित्	– किसी में	in some	**दयानिधान**	– दयालु	kind
गोपालकाः	– ग्वाले	cow-men	**द्वे खण्डे**	– दो टुकड़े	two pieces
चारयितुम्	– चराने के लिए	for grazing	**अर्धम्**	– आधा	half
अमात्यः	– मंत्री	minister	**शिरश्छेदनम्**	– सिर काटना	to chop the head

प्रत्यययुक्त शब्द (Words with a Suffix)

चारयितुम् – चर् (प्रेरणार्थक) + तुमुन् (प्रत्यय)
क्रीडितुम् – क्रीड् (धातु) + तुमुन् (प्रत्यय)
कृत्वा – कृ (धातु) + क्त्वा (प्रत्यय)
दृष्ट्वा – दृश् (धातु) + क्त्वा (प्रत्यय)

सन्धिच्छेद (Disjoining words)

किञ्चित् – किम् + चित्
कस्मिंश्चित् – कस्मिन् + चित्
ततस्ततः – ततः + ततः
सैव – सा + एव
शिरश्छेदनम् – शिरः + छेदनम्

समस्त पद (Compound Words)

चाणक्यनाटकम् – चाणक्यस्य नाटकम्
प्रजाजनाः – प्रजायाः जनाः

अभ्यास

सम्प्रति लेखनीयम्

1. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए। Answer in one word.)

(क) प्रणयः **कस्य** चित्रम् अरचयत्? ....
(ख) गोपालकाः धेनूः **कुत्र** अनयन्? ....
(ग) वने बालाः **किं** कर्तुम् आरभन्? ....
(घ) बालकस्य न्यायं दृष्ट्वा **कः** विस्मितः अभवत्? ....
(ङ) सः बालकः **कः** आसीत्? ....

2. वाक्यानि शुद्धानि कृत्वा पुनः लिखत।

(वाक्यों को शुद्ध करके पुनः लिखिए। Correct the sentences and rewrite them.)

(क) बालकाः 'राजा-राजा' इति **अक्रीडत्।** ....
(ख) महिला नृपस्य चरणयोः **अपतताम्।** ....
(ग) अहम् एकं नाटकम् **अपश्यत्।** ....

© New Saraswati House (India) Private Limited

(घ) युवां सदा सत्यम् **अवदताम्।** ....

(ङ) तौ क्रीडाक्षेत्रे **अधावतम्।** ....

3. प्रश्ननिर्माणं कुरुत।

(प्रश्न निर्माण कीजिए। Frame questions.)

उदाहरणम्– सा **शिशोः** माता अस्ति। सा **कस्य** माता अस्ति?

(क) प्रणयः **चित्रं** रचयति। ....

(ख) चाणक्यः **चन्द्रगुप्तं** नृपम् अकरोत्। ....

(ग) **तस्याः** अङ्के शिशुः आसीत्। ....

(घ) एकः **नरः** सर्वम् अपश्यत्। ....

(ङ) सः बालकः **चन्द्रगुप्तः** आसीत्। ....

भाषा-अवबोधनम्

1. निम्नलिखितक्रियापदानाम् धातुः, लकारः, पुरुषः वचनं च लिखत।

(निम्नलिखित क्रियापदों के धातु, लकार, पुरुष तथा वचन लिखिए। Parse the words given below.)

	शब्दः	धातुः	लकारः	पुरुषः	वचनम्
(क)	अपश्यम् –	....	....	....	....
(ख)	क्रीडाम –	....	....	....	....
(ग)	करोतु –	....	....	....	....
(घ)	वदताम् –	....	....	....	....

2. अधोलिखितवाक्यानि लृट्लकारे परिवर्तयत।

(दिए गए वाक्यों को लृट् लकार में परिवर्तित कीजिए। Rewrite the following sentences in future tense.)

उदाहरणम्– वयम् अपि 'अध्यापक-अध्यापक' अक्रीडाम। **वयम् अपि 'अध्यापक-अध्यापक' क्रीडिष्यामः।**

(क) द्वे महिले तत्र आगच्छताम्। ....

(ख) पुत्रः जनकम् अनमत्। ....

(ग) इयं मम सेविका आसीत्। ....

(घ) नृपः तं ध्यानेन अपश्यत्। ....

(ङ) सः शिशोः खण्डे न अकरोत्। ....

3. उदाहरणम् आधृत्य प्रकृति-प्रत्यय-विभागं कुरुत।

(प्रकृति-प्रत्यय पृथक् कीजिए। Disjoin the given words as directed.)

उदाहरणम्– पठित्वा – पठ् + क्त्वा **खादितुम् – खाद् + तुमुन्**

(क) कृत्वा – .... + ... (ख) चारयितुम् – .... + ...

(ग) क्रीडितुम् – .... + ... (घ) दृष्ट्वा – .... + ...

(ङ) गत्वा – .... + ... (च) पाठयित्वा – .... + ...

© New Saraswati House (India) Private Limited

4. संस्कृतेन अनुवादं कुरुत।

(संस्कृत में अनुवाद कीजिए। Translate into Sanskrit.)

(क) बच्चों को दूध पीना चाहिए। ....

(ख) कल मेरा मित्र दिल्ली से आया। ....

(ग) हम घूमने के लिए श्रीनगर जाएँगे। ....

(घ) चाणक्य एक महान विद्वान और अर्थशास्त्री था। ....

मूल्यपरकम्

1. किं न्यायकाले निष्पक्ष-न्यायं करणीयम्? (क्या न्याय के समय निष्पक्ष न्याय करना चाहिए?)
2. किं त्वं गुणानुसारेण नेतृणाम् चयनं करिष्यसि? (क्या तुम गुणों के अनुसार नेता चुनते हो?)

क्रियाकलापः

1. दिए गए शब्दों की सहायता से पाठ में आए किसी एक चित्र पर पाँच वाक्य संस्कृत में लिखें–

   चाणक्यः, पुष्पाणि, चित्रम्, चित्रकारः, तूलिका, विविधवर्णः,
   विभिन्नचित्राणि, वृक्षः, बालिकाः, बालाः, दण्डः, पक्षिणः, क्रीडनकः।

2. चाणक्य एक महान नीतिज्ञ थे, उन्होंने 'चाणक्य-नीति दर्पण' नामक ग्रंथ की रचना की थी, जिसमें बहुत से शिक्षाप्रद श्लोक हैं। शिक्षक की सहायता से प्रत्येक छात्र कम से कम पाँच श्लोक संकलित करके उनके चार्ट बनाएँ या संचिका में लिखें। इन्हें याद करके कक्षा में अथवा बाल सभा में सस्वर सुनाएँ।

याद रखें

1. संस्कृत में प्रकृति-प्रत्यय विभाग से तात्पर्य है, दिए हुए शब्दों में से धातु (प्रकृति) एवं प्रत्यय को अलग करना। यदि ये शब्द उपसर्ग युक्त हों तो उपसर्ग को भी अलग कर देना चाहिए; जैसे–

   आनेतुम् = आ (उपसर्ग) + नी (धातु) + तुमुन् (प्रत्यय)।

2. अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करते समय जहाँ तक संभव हो क्रिया को ही शुद्ध करना चाहिए; जैसे–'बालिका उद्याने क्रीडन्ति' का शुद्ध रूप 'बालिका उद्याने क्रीडति' होना चाहिए न कि 'बालिकाः उद्याने क्रीडन्ति'। यद्यपि यह वाक्य भी व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध है, परंतु इसमें अर्थ परिवर्तित हो गया है, क्योंकि मूल वाक्य में एक बालिका के बारे में बात की जा रही है न कि अनेक बालिकाओं के बारे में।

सूक्तिः

॥ अहिंसा परमो धर्मः ॥

(अहिंसा ही सबसे बड़ा धर्म है।)

© New Saraswati House (India) Private Limited

3 महताम् अपि महान्

(उपपद-विभक्ति-प्रयोग)

जब किसी विशेष पद के कारण किसी विशेष विभक्ति का प्रयोग होता है, तब उसे **उपपद-विभक्ति** कहते हैं।

© New Saraswati House (India) Private Limited

शिक्षकः – छात्राः! किं यूयं जानीथ—महाराजा रणजीतसिंहः नेत्रेण काणः आसीत्?

शिष्याः – आम्! वयं जानीमः।

शिक्षकः – किम् इदम् अपि जानीथ यत् सः जन्मना काणः नासीत्?

शिष्याः – तर्हि कदा स काणः अभवत्?

शिक्षकः – काचित् वृद्धा पाषाणखण्ड-प्रहारेण तं नेत्रेण काणः अकरोत्।

शिष्याः – किं वदति भवान्? धिक् तां वृद्धाम्।

शिक्षकः – आम्! आश्चर्यमिदम् यत् सः तस्यै वृद्धायै अन्नं धनं च अयच्छत्।

शिष्याः – किमर्थं सः एवम् अकरोत्? भवान् महाराजा रणजीतसिंहस्य कथां श्रावयतु। अस्मभ्यं कथा अतीव रोचते।

शिक्षकः – शृणुत! एकदा सः भटैः सह ग्रामम् अगच्छत्। तत्र सः स्वमित्रस्य गृहं प्रति अगच्छत् तदा एव तस्य नेत्रे एकम् पाषाणखण्डम् अपतत्। एका वृद्धा तत् पाषाणखण्डम् अक्षिपत्। सैनिकाः शीघ्रम् एव तां वृद्धाम् अभितः अतिष्ठन् तस्यै अक्रुध्यन् च।

तदा महाराजा रणजीतसिंहः तां वृद्धाम् अपृच्छत्–"त्वं मां किमर्थम् अमारयः?" सा अवदत्–"न, न! अहं भवन्तं न अमारयम्। अहं मम शिशवः च क्षुधिताः आसन्। अहं वृक्षात् फलं पातयितुम् ऐच्छम्। अतः फलाय पाषाणखण्डान् अक्षिपम्।" महाराजा अवदत्–"अहम् अवजानम्। त्वं गच्छ।" भटेभ्यः च आदेशम् अयच्छत् यत् तस्यै वृद्धायै पर्याप्तम् अन्नं धनं च यच्छेत्।

एकः सैनिकः अवदत्–"महाराज! इयं त्वाम् पाषाणखण्डेन अमारयत् भवान् च तस्यै दण्डं यच्छेत्।" महाराजा अवदत्–"न माम्, सा वृक्षं मारयति स्म। तदापि वृक्षः तस्यै फलं यच्छति अहं च पुनः नृपः अस्मि।"

© New Saraswati House (India) Private Limited

शब्द-शक्तिः (Word Meanings)

महताम्	– महान लोगों का	of the great people	**अभितः**	– चारों ओर	all over
नेत्रेण काणः	– आँख से काना	one-eyed	**क्षुधिताः**	– भूखे	hungry
जन्मना	– जन्म से	by birth	**ऐच्छम्**	– (मैंने) इच्छा की	(I) wished
भटैः सह	– योद्धाओं के साथ	with warriors	**अक्षिपम्**	– (मैंने) फेंका	(I) throw
पाषाणखण्ड-प्रहारेण	– पत्थर मारने से	by pelting stone	**अवजानम्**	– (मैं) जान गया	(I) knew

नई धातुएँ (New Roots)

इष् – इच्छा करना — to wish

अव + ज्ञा – जानना — to know

संयोगयुक्त शब्द (Combined Words)

आश्चर्यमिदम् – आश्चर्यम् + इदम्

समस्त पद (Compound Words)

पाषाणखण्डप्रहारेण – पाषाणस्य खण्डस्य प्रहारेण

अभ्यास

सम्प्रति लेखनीयम्

1. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए। Answer in one word.)

(क) महाराजा रणजीतसिंहः **केन** काणः आसीत्? ....

(ख) रणजीतसिंहं **का** काणः अकरोत्? ....

(ग) महाराजा **कैः** सह ग्रामम् अगच्छत्? ....

(घ) महाराजा **कस्मै** अन्नं धनं च अयच्छत्? ....

(ङ) सा **कं** मारयति स्म? ....

2. स्थूलानि पदानि आधारीकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत।

(स्थूल पदों के आधार पर प्रश्न-निर्माण कीजिए। Frame questions based on the bold words.)

उदाहरणम्– राजा वृद्धायै **अन्नं धनं च** अयच्छत्। — राजा वृद्धायै **किम्** अयच्छत्?

(क) स **स्वमित्रस्य** गृहं प्रति अगच्छत्। ....

(ख) **सैनिकाः** तां वृद्धाम् अभितः अतिष्ठन्। ....

(ग) **भटेभ्यः** सः आदेशम् अयच्छत्। ....

(घ) इयं त्वाम् **अश्मेन** अमारयत्। ....

(ङ) एकदा सः **भटैः** सह ग्रामं अगच्छत्। ....

3. निम्नलिखितानि वाक्यानि कः कं प्रति उक्तवान्?

(किसने किससे कहा? Who said and to whom?)

	कः	**कम्**
(क) त्वं मां किमर्थम् अमारयः?	....	....
(ख) इयं त्वाम् अश्मेन अमारयत्।	....	....

© New Saraswati House (India) Private Limited

(ग) मम शिशवः क्षुधिताः आसन्। ....

(घ) अहम् अवजानम्। त्वं गच्छ। ....

4. कथानकक्रमानुसारेण पुनर्लिखत।

(दिए गए वाक्यों को कथानक के क्रमानुसार पुनः लिखिए। Rewrite the sentences in the proper sequence.)

(क) वृक्षः तस्यै फलं यच्छति, अहं च पुनः नृपः। ....

(ख) सः तस्यै वृद्धायै अन्नं धनं च अयच्छत्। ....

(ग) सः जन्मना काणः न आसीत्। ....

(घ) सा त्वाम् पाषाणखण्डेन अमारयत्। ....

(ङ) भवान् च तस्यै दण्डं यच्छेत्। ....

(च) महाराजा रणजीतसिंहः नेत्रेण काणः आसीत्। ....

(छ) अहं फलाय पाषाणखण्डान् अक्षिपम्। ....

(ज) वृद्धा पाषाणखण्ड-प्रहारेण तं काणः अकरोत्। ....

भाषा-अवबोधनम्

1. कोष्ठकात् समुचितानि विकल्पानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(कोष्ठक से उचित विकल्पों को चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। Fill in the blanks using suitable word from the bracket.)

(क) .... उभयतः वृक्षाः सन्ति। (मार्गम्, मार्गे, मार्गस्य)

(ख) बालकः .... सह गच्छति। (जनकेन, जनकं, जनकस्य)

(ग) सः भिक्षुकः .... बधिरः। (कर्णयोः, कर्णाभ्याम्, कर्णेन)

(घ) अधुना रामः .... प्रति अगच्छत्। (गृहम्, गृहस्य, गृहेण)

(ङ) मोहनः इदं पुस्तकं .... दास्यति? (कम्, कस्मै, कस्य)

(च) .... फलं रोचते। (माम्, मह्यम्, मया)

2. निम्नलिखितानि वाक्यानि उपपदविभक्ति-अनुसारेण शुद्धानि कुरुत।

(निम्नलिखित वाक्यों को उचित उपपद विभक्ति के अनुसार शुद्ध कीजिए। Correct the sentences as per example.)

उदाहरणम्– राजा **भटान्** आदेशं अयच्छत्। राजा **भटेभ्यः** आदेशं अयच्छत्।

(क) **मार्गस्य** उभयतः वृक्षाः सन्ति। ....

(ख) **पुस्तकस्य** विना कथं पठिष्यसि? ....

(ग) **मां** शीतलं जलं रोचते। ....

(घ) बालकः **जनकेन** प्रश्नं पृच्छति। ....

(ङ) छात्राः **गुरवे** प्रश्नं **पृच्छन्ति**। ....

© New Saraswati House (India) Private Limited

3. मञ्जूषायाः उचितशब्दैः वाक्यानि पूरयित्वा पुनः लिखत।

(मंजूषा से उचित शब्द चुनकर वाक्यों को पूरा कीजिए। Fill in the blanks using appropriate word from the box.)

सर्वदा, अपि, कदा, यत्, सह, केन

(क) सीता रामेण .... गच्छति।

(ख) त्वम् .... पठिष्यसि?

(ग) अहम् .... फलं खादामि।

(घ) .... कार्यं कुरु परिश्रमेण कुरु।

(ङ) सः .... काणः अभवत्?

(च) पुत्र! .... सत्यं वद।

मूल्यपरकम्

1. किं त्वं निर्धनानां सहायतां करोषि? (क्या तुम निर्धन लोगों की सहायता करते हो?)
2. क्षमा निर्बलानां गुणम् अस्ति अथवा सबलानाम्? (क्षमा निर्बलों का गुण है अथवा बलशालियों का?)

क्रियाकलापः

1. उपपद-विभक्ति का प्रयोग करते हुए अपनी संचिका में सुंदर तालिका बनाएँ; जैसे–

शब्द / धातु	**विभक्ति**	**उदाहरण**
सह	तृतीया	सीता **रामेण** सह गच्छति। माला **अम्बया** सह पचति।
दा (यच्छ्)	चतुर्थी	शिक्षकः **छात्रेभ्यः** पुरस्कारं दास्यति। माता **पुत्राय** दुग्धम् यच्छति।

2. पाठ में आए दूसरे चित्र को देखकर संस्कृत में पाँच वाक्य लिखें।

याद रखें

किसी विशेष पद के कारण किसी विभक्ति का प्रयोग होना ही उपपद-विभक्ति कहलाता है; जैसे–

कृष्णेन सह क्रीडति। 'सह' के साथ तृतीया।   पिता **पुत्राय क्रुध्यति**। 'क्रुध्' धातु के साथ चतुर्थी।

इस संदर्भ में विस्तार से परिशिष्ट में लिखा गया है।

सूक्तिः

॥ अहिंसा परमो धर्मः ॥

(अहिंसा ही सबसे बड़ा धर्म है।)

© New Saraswati House (India) Private Limited

4 सुवचनानि

सुखार्थिनः कुतो विद्या, विद्यार्थिनः कुतो सुखम्।
सुखार्थी वा त्यजेत् विद्यां, विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम्॥

गौरवं प्राप्यते दानात्, न तु वित्तस्य सञ्चयात्।
स्थितिः उच्चैः पयोदानां, पयोधीनाम् अधः स्थितिः॥

दुर्जनः सज्जनः भूयात्, सज्जनः शान्तिम् आप्नुयात्।
शान्तः मुञ्चेत् बन्धनेभ्यः, मुक्तः च अन्यान् विमोचयेत्॥

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यम्,
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम्,
सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्॥

सर्पाः पिबन्ति पवनं न च दुर्बलास्ते,
शुष्कैः तृणैः वनगजाः बलिनः भवन्ति।
कन्दैः फलैः मुनिवराः क्षपयन्ति कालम्,
सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम्॥

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः,
प्रारभ्य विघ्नविहताः विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः,
प्रारब्धमुत्तमजनाः न परित्यजन्ति॥

© New Saraswati House (India) Private Limited

शब्द-शक्तिः (Word Meanings)

कुतः	– कहाँ से	from where	हरति	– दूर करता है	takes away
सुखार्थी	– सुख चाहने वाला	pleasure seeking	सिञ्चति	– सींचती है	sprinkles/irrigate
वित्तस्य	– धन का	of wealth	वाचि	– वाणी में	in speech
सञ्चयात्	– इकट्ठा करने से	by collecting	दिशति	– दिशा देती है	directs
पयोदानाम्	– बादलों की	of the clouds	अपाकरोति	– दूर करती है	removes
पयोधीनाम्	– समुद्रों की	of the oceans	दिक्षु	– सभी दिशाओं में	in all directions
अधः	– नीचे	down	तनोति	– फैलाता/फैलाती है	spreads
आप्नुयात्	– प्राप्त करे	should get	पुंसाम्	– मनुष्यों का	of men
मुञ्चेत्	– छोड़ दे	should leave	प्रारभ्यते	– आरंभ किया जाता है	is started
विमोचयेत्	– मुक्त करे	should free	विघ्नविहताः	– विघ्नों से रोके गए	stopped by obstacles
क्षपयन्ति	– बिताते हैं	pass/spend	विरमन्ति	– (वे) रुक जाते हैं	(they) stop
निधानम्	– खज़ाना	treasure	प्रतिहन्यमानाः	– रोके जाते हुए	being stopped
जाड्यम्	– मूर्खता, जड़ता	stupidity/ignorance	प्रारब्धम्	– प्रारंभ किए हुए को	the started
धियो	– बुद्धि की	of intellect			

नई धातुएँ (New Roots)

आप्	–	प्राप्त करना	to get	दिश्	–	दिशा देना	to direct
मुञ्च्	–	छोड़ना	to left	तन्	–	फैलाना	to spread
क्षप्	–	बिताना	to spend	वि + रम्	–	रुकना	to stop

संयोगयुक्त शब्द (Combined Words)

प्रारब्धमुत्तमजना:	–	प्रारब्धम्	+	उत्तमजना:	पापमपाकरोति	–	पापम्	+	अपाकरोति

समस्त पद (Compound Words)

वनगजा:	–	वनस्य गजा:	विघ्नविहता:	–	विघ्नै: विहता:

सन्धिच्छेद (Disjoining words)

सुखार्थी	–	सुख	+	अर्थी	दुर्बलास्ते	–	दुर्बला:	+	ते
विद्यार्थी	–	विद्या	+	अर्थी	मानोन्नतिम्	–	मान	+	उन्नतिम्
दुर्जन:	–	दु:	+	जन:	सत्सङ्गति:	–	सत्	+	सङ्गति:
सज्जन:	–	सत्	+	जन:	पुनरपि	–	पुन:	+	अपि

अभ्यास

सम्प्रति लेखनीयम्

1. मञ्जूषाया: एकपदेन उत्तरत।

(मंजूषा से उचित पद चुनकर एक पद में उत्तर दीजिए। Give one word answer using the words given in the box.)

शान्त:, विद्याम्, शुष्कै: तृणै:, गौरवम्।

(क) सुखार्थी किं त्यजेत्? ....

(ख) बन्धनेभ्य: क: मुञ्चेत्? ....

(ग) दानात् किं प्राप्यते? ....

(घ) वनगजा: कै: बलिन: भवन्ति? ....

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए। Answer in a complete sentence.)

(क) सत्सङ्गति: जनानां किं किं करोति? ....

(ख) पयोदानां स्थिति: कीदृशी भवति? ....

(ग) सज्जन: किम् आप्नुयात्? ....

(घ) नीचै: केन न प्रारभ्यते? ....

© New Saraswati House (India) Private Limited

3. मञ्जूषायाः उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(मंजूषा से उचित पद चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। Fill in the blanks using the words from the box.)

सन्तोषः, वित्तस्य, मुनिवराः, कीर्तिम्।

(क) दानात् गौरवं प्राप्यते, न तु .... सञ्चयात्। (ख) सत्सङ्गतिः .... दिक्षु तनोति।

(ग) .... कन्दैः फलैः कालम् क्षपयन्ति। (घ) पुरुषस्य परं निधानं .... एव भवति।

4. तृतीयस्य चतुर्थस्य च श्लोकयोः अन्वयः सञ्चिकायां कुरुत।

(तीसरे और चौथे श्लोक का अन्वय अपनी पुस्तिका में लिखें। Write the third and fourth *shlokas* in the prose form in your notebook.)

भाषा-अवबोधनम्

1. निम्नलिखितानाम् अव्ययपदानां स्ववाक्येषु प्रयोगं कुरुत।

(अव्ययों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए। Use the given indeclinables to form sentences.)

(क) कुतः – ....

(ख) तु – ....

(ग) उच्चैः – ....

(घ) अधः – ....

(ङ) पुनः – ....

2. निम्नवाक्यानि विधिलिङ्लकारे परिवर्तयत।

(निम्नलिखित वाक्यों को विधिलिङ् लकार में परिवर्तित कीजिए। Change the sentences in 'विधिलिङ् लकार'.)

उदाहरणम्– सः नृपः **अभवत्।** सः नृपः **भवेत्।**

(क) विद्यार्थी सुखं त्यजति। ....

(ख) ते शतवर्षाणि अजीवन्। ....

(ग) पयोधीनां अधः स्थितिः अस्ति। ....

(घ) वयम् आपणं गमिष्यामः। ....

(ङ) तौ बुद्धिमन्तौ आस्ताम्। ....

3. शब्दार्थमेलनं कुरुत।

(दिए गए शब्दों का उनके अर्थों के साथ मिलान कीजिए। Match the following words with their proper meanings.)

(क) पुंसाम्	(*i*) वाणी में
(ख) सञ्चयात्	(*ii*) खज़ाना
(ग) निधानम्	(*iii*) फैलाता है
(घ) वाचि	(*iv*) मनुष्यों का
(ङ) तनोति	(*v*) इकट्ठा करने से

© New Saraswati House (India) Private Limited

4. संस्कृतेन अनुवादं कुरुत।

(संस्कृत में अनुवाद कीजिए। Translate into Sanskrit.)

(क) सदा गुरुजनों का आदर करो। ....

(ख) ग्रीष्मकाल में धूप में मत खेलो। ....

(ग) दूषित जल रोगों का घर होता है। ....

(घ) आओ, हम सब मिलकर वृक्षारोपण करें। ....

(ङ) संकट काल में मित्रों की सहायता करो। ....

मूल्यपरकम्

1. किं त्वं अनुचित-कार्यैः स्वसुखाय धनसञ्चयं करोषि? (क्या तुम अपने सुख के लिए अनुचित कार्य करके धन इकट्ठा करते हो?)
2. किं त्वं विघ्ने प्राप्ते कार्यं त्यजसि? (क्या तुम बाधा आने पर कार्य त्याग देते हो?)
3. किं तुभ्यं सत्सङ्गतिः रोचते? (क्या तुम्हें सत्संगति अच्छी लगती है?)

क्रियाकलापः

1. छात्रों ने अब तक संचिका में जितने श्लोक संकलित किए हैं, उन सबका अन्वय करें। यदि संभव हो तो इनके सुंदर चार्ट बनाकर कक्षा को सजाएँ।
2. छात्र पाठ में दिए गए सभी श्लोकों का सस्वर पाठ करें और उन्हें याद करें।

याद रखें

अन्वय– पद्य या श्लोकों को लिखते समय मात्रा और लय का ध्यान रखते हुए शब्दों को आगे पीछे कर दिया जाता है। इन्हें कर्ता, कर्म, क्रिया आदि के अनुसार गद्य रूप में क्रमबद्ध करने को अन्वय कहते हैं। उदाहरण के लिए दूसरे श्लोक का अन्वय इस प्रकार है;

गौरवं दानात् प्राप्यते, वित्तस्य सञ्चयात् तु न। पयोदानां स्थितिः उच्चैः (भवति) पयोधीनाम् स्थितिः अधः (भवति)।।

ध्यान से देखें कि अन्वय करने से श्लोक का अर्थ समझने में आसानी होती है।

सूक्तिः

॥ भिन्नरुचिः हि लोकः ॥

(अलग-अलग रुचि का नाम ही संसार है।)

© New Saraswati House (India) Private Limited

5

शृगाल–कथा

कस्मिंश्चित् वन-प्रदेशे प्रचण्डः नाम शृगालः प्रतिवसति स्म। कदाचित् क्षुधापीडितः सः नगरं प्रति अगच्छत्। तत्र तं दृष्ट्वा कुक्कुराः तं प्रति अधावन्। सः प्राणभयात् एकं रजकगृहं प्राविशत्। तत्र नीलरसपूर्णम् एकम् पात्रम् आसीत्। सः तस्मिन् पात्रे अपतत् नीलवर्णः चाभवत्। कुक्कुराः अपि तं च पश्यन् ततः अगच्छन्।

तदा प्रचण्डः रजकगृहात् वनं प्रति अचलत्। नीलवर्णं तं दृष्ट्वा पशवः भयात् इतस्ततः अधावन्। प्रचण्डः भयव्याकुलान् तान् अवलोक्य उच्चैः अवदत्–भो भो पशवः! यूयं मां दृष्ट्वा किमर्थं भयभीताः? अहं तु युष्माकं राजा अस्मि। ब्रह्मा माम् आदिष्टवान्, 'अरे, भूमौ गच्छ। तत्र गत्वा त्वं शासनं कुरु येन तेषु परस्परं कलहो न स्यात्'। युष्माकं सर्वेषां कर्त्तव्यानां निश्चयमहं करिष्यामि। एवं स तेषां राजा अभवत्।

एवं गच्छति काले कदाचित् सः शृगालवृन्दस्य कोलाहलम् अशृणोत्। तं शब्दं श्रुत्वा पुलकितमनः सः उत्थाय तारस्वरेण स्वजातिशब्दमेव उच्चैः कर्तुमारभत्। तम् एवं शब्दं कुर्वन्तं श्रुत्वा सर्वे पशवः तं प्रति आश्चर्येण अपश्यन्–'अहो! वयम् अनेन शृगालेन वञ्चिताः' इति कथयित्वा तं खण्डशः अकुर्वन्।

सत्यमेव उक्तम्–

सर्वस्य हि परीक्ष्यन्ते स्वभावा नेतरे गुणाः।
अतीत्य हि गुणान् सर्वान् स्वभावो मूर्ध्नि वर्तते॥

© New Saraswati House (India) Private Limited

शब्द-शक्तिः (Word Meanings)

रजकगृहम्	– धोबी का घर	washer-man's house		तारस्वरेण	– ज़ोर से	loudly
नीलवर्णः	– नीले रंग का	of blue colour		वञ्चिताः	– ठगे गए	deceived
अवलोक्य	– देखकर	after seeing		खण्डशः	– टुकड़े-टुकड़े	in pieces
आदिष्टवान्	– आदेश दिया	ordered		परीक्ष्यन्ते	– परीक्षा ली जाती है	examined
कलहो (कलहः)	– झगड़ा	quarrel		नेतरे	– दूसरे नहीं	not others
वृन्दम्	– झुंड	group/herd		अतीत्य	– पार/से आगे	going beyond
पुलकितमनः	– प्रसन्न मन से	with happy mind		मूर्ध्नि	– सबसे ऊपर	at the top

संयोगयुक्त शब्द (Combined Words)

निश्चयमहम् – निश्चयम् + अहम्
सत्यमेव – सत्यम् + एव
कर्तुमारभत् – कर्तुम् + आरभत्
किमर्थम् – किम् + अर्थम्

प्रत्यययुक्त शब्द (Words with a Suffix)

अवलोक्य – अव (उपसर्ग) + लोक् (धातु) + ल्यप् (प्रत्यय)
उत्थाय – उत् (उपसर्ग) + स्था (धातु) + ल्यप् (प्रत्यय)
कर्तुम् – कृ (धातु) + तुमुन् (प्रत्यय)
कथयित्वा – कथ् (धातु) + क्त्वा (प्रत्यय)

समस्त पद (Compound Words)

क्षुधापीडितः – क्षुधायाः पीडितः
प्राणभयात् – प्राणानाम् भयात्
रजकगृहम् – रजकस्य गृहम्
नीलरसपूर्णम् – नीलरसस्य पूर्णम्/नीलरसेन पूर्णम्
शृगालवृन्दस्य – शृगालानाम् वृन्दस्य
भयभीताः – भयात् भीताः

सन्धिच्छेद (Disjoining Words)

कस्मिंश्चित् – कस्मिन् + चित्
चाभवत् – च + अभवत्
इतस्ततः – इतः + ततः
नेतरे – न + इतरे

अभ्यास

सम्प्रति लेखनीयम्

1. उचितविकल्पेन वाक्यपूर्तिं कुरुत।

(उचित उत्तर चुनकर वाक्यों को पूरा कीजिए। Complete the sentences with correct options.)

(क) एवं प्रचण्डः .... राजा अभवत्। (तस्य, तासाम्, तेषाम्)

(ख) त्वं .... कर्त्तव्यानां निश्चयं कुरु। (मम, मयि, माम्)

(ग) सर्वे पशवः .... प्रति अपश्यन्। (तस्य, तम्, त्वम्)

© New Saraswati House (India) Private Limited

(घ) यूयं .... दृष्ट्वा किमर्थं भयभीता:? (मह्यम्, तुभ्यम्, माम्)

(ङ) प्रचण्डः .... अवलोक्य उच्चैः अवदत्। (तान्, तेन, तस्य)

2. अधोलिखितानि वाक्यानि कथानकक्रमानुसारं लिखत।

(नीचे लिखे वाक्यों को कथा के क्रमानुसार लिखिए। Rewrite the following sentences in a proper sequence.)

(क) प्रचण्डः रजकगृहात् वनम् अगच्छत्। ....

(ख) तत्र नीलरसपूर्णम् एकं पात्रम् आसीत्। ....

(ग) तं दृष्ट्वा कुक्कुराः तं प्रति अधावन्। ....

(घ) सः शृगालवृन्दस्य कोलाहलम् अशृणोत्। ....

(ङ) कुक्कुराः अपि तं न पश्यन् ततः अगच्छन्। ....

(च) "वयम् अनेन शृगालेन वञ्चिताः।" ....

(छ) युष्माकं सर्वेषां कर्त्तव्यानां निश्चयमहं करिष्यामि। ....

3. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए। Answer in one word.)

(क) प्रचण्डः कुत्र प्रतिवसति स्म? ....

(ख) क्षुधापीडितः सः कुत्र अगच्छत्? ....

(ग) कुक्कुरेभ्यः भीतः प्रचण्डः कस्य गृहम् अगच्छत्? ....

(घ) रजकगृहात् सः कुत्र अगच्छत्? ....

4. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए। Answer in one sentence.)

(क) प्रचण्डः नीलवर्णः कथमभवत्? ....

(ख) कुक्कुराः तं कथं त्यक्त्वा दूरतः अगच्छन्? ....

(ग) भयभीतान् पशून् सः किमकथयत्? ....

(घ) तस्य नाशः कदा अभवत्? ....

5. प्रश्ननिर्माणं कुरुत।

(प्रश्न-निर्माण कीजिए। Frame questions.)

(क) **प्रचण्डः** नाम शृगालः आसीत्। ....

(ख) **कुक्कुराः** तम् प्रति अधावन्। ....

(ग) सः **पात्रे** अपतत्। ....

(घ) पशवः **इतस्ततः** अधावन्। ....

(ङ) पशवः **शृगालवृन्दस्य** कोलाहलम् अशृणोत्। ....

© New Saraswati House (India) Private Limited

भाषा-अवबोधनम्

1. निम्नलिखितानि वाक्यानि लङ्लकारे लिखत।

(निम्नलिखित वाक्यों को लङ् लकार में लिखिए। Write the following sentences into past tense.)

उदाहरणम्– त्वं शासनं कुरु। **त्वं शासनम् अकरोः।**

(क) अहं तु युष्माकं राजा अस्मि। ....

(ख) कः अपि श्रेष्ठः राजा नास्ति। ....

(ग) त्वं भूलोकं गच्छ। ....

(घ) तेषां परस्परं कलहो न स्यात्। ....

(ङ) सर्वेषां कर्त्तव्यानां निश्चयमहं करिष्यामि। ....

2. निम्नलिखितानि वाक्यानि लृट्लकारे परिवर्तयत।

(निम्नलिखित वाक्यों को लृट् लकार में लिखिए। Write the sentences in future tense.)

उदाहरणम्– प्रचण्डः रजकगृहात् वनं प्रत्यचलत्। **प्रचण्डः रजकगृहात् वनं प्रति चलिष्यति।**

(क) वनजन्तवः इतस्ततः अधावन्। ....

(ख) प्रचण्डः उच्चैः अवदत्। ....

(ग) यूयं मम समीपे आगच्छत्। ....

(घ) कुक्कुराः तम् अपश्यन्। ....

3. पदपरिचयं कुरुत।

(पद-परिचय कीजिए। Parse the words.)

	शब्दः	मूलशब्दः	लिङ्गम्	विभक्तिः	वचनम्
(क)	युष्माकम् –	....	....	....	....
(ख)	कुक्कुरैः –	....	....	....	....
(ग)	कर्त्तव्यानाम् –	....	....	....	....
(घ)	अनुशासनेन –	....	....	....	....

4. अधोलिखितपदेषु उचितं प्रत्ययं (✓) चिह्नीकुरुत।

(दिए गए शब्दों के उचित प्रत्यय को (✓) चिह्नित कीजिए। Tick (✓) the correct answer.)

	शब्द	उपसर्ग + धातु	प्रत्यय		शब्द	उपसर्ग + धातु	प्रत्यय
(क)	दृष्ट्वा	दृश्	क्त्वा / ल्यप्	(ख)	कर्तुम्	कृ	ल्यप् / तुमुन्
(ग)	उत्थाय	उत् + स्था	ल्यप् / क्त	(घ)	अवलोक्य	अव + लोक्	ल्यप् / तुमुन्
(ङ)	पतितः	पत्	क्त / क्तवतु	(च)	हर्तुम्	हृ	क्त / तुमुन्
(छ)	गन्तुम्	गम्	तुमुन् / क्त्वा	(ज)	प्रत्यासन्न	प्रति + आ + सद्	तुमुन् / क्त

© New Saraswati House (India) Private Limited

मूल्यपरकम्

1. किं त्वं स्वभावानुसारं कार्यं करिष्यसि अथवा परिस्थित्यानुसारम्? (क्या तुम अपने स्वभाव के अनुसार कोई कार्य करते हो या परिस्थिति के अनुसार?)
2. किं मुखरञ्जनेन कस्यापि स्वभावं परिवर्तयति? (क्या किसी के मुँह रँग लगने से उसका स्वभाव बदल जाता है?)
3. किं त्वं वञ्चनेन उच्चपदं प्राप्तुम् इच्छसि? (क्या तुम धोखे से उच्च पद प्राप्त करने की इच्छा करते हो?)

क्रियाकलापः

- 'याद रखें' के आधार पर पूर्व पठित अन्य धातुओं के साथ छात्र 'क्त' और 'क्तवतु' प्रत्यय लगाकर चार्ट बनाएँ; जैसे–

धातु	'क्त' प्रत्यययुक्त शब्द	अर्थ	'क्तवतु' प्रत्यययुक्त शब्द	अर्थ
भी	भीतः	डरा हुआ	भीतवत्	डर गया
पठ्	पठितः	पढ़ा हुआ	पठितवत्	पढ़ गया

याद रखें

संस्कृत भाषा में क्त और क्तवतु प्रत्यय का प्रयोग भूतकाल के लिए किया जाता है और ये दोनों प्रत्यय लगने के बाद धातु शब्द में परिवर्तित हो जाती है; जैसे–

शब्दः		धातुः		प्रत्ययः		अर्थः
भीताः	=	भी	+	क्त	=	डर गए।
वञ्चिताः	=	वञ्च्	+	क्त	=	ठगे गए।
उक्तम्	=	वच्	+	क्त	=	कहा गया।
कथिवान्	=	कथ्	+	क्तवतु	=	कहा गया।
लिखितवान्	=	लिख्	+	क्तवतु	=	लिखा गया।
आदिष्टवान्	=	आ (उपसर्ग) + दिश्	+	क्तवतु	=	आदेश दिया।

धातु में प्रत्यय लगने पर जब वह शब्द बन जाती है तो उसके शब्दरूप चलते हैं। देखें अभ्यास-पुस्तिका पृष्ठ संख्या 119-122।

सूक्तिः

॥ मनसो दमनं दमः ॥

(मन की इच्छाओं का दमन ही संयम है।)

© New Saraswati House (India) Private Limited